Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner
Scanned with Cam
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Mental Retardation

प्र -) मानसिक दुर्बलता से आप क्या समझते हैं? नैदानिक समस्या के रूप में प्रस्तुत करें!

Ans → नैदानिक समस्या का तात्पर्य उस समस्यात्मक व्यवहार से है, जिससे व्यक्ति के गंभीर तथा साधारण विसंगठन एवं कुसमायोजन का बोध होता है। मानसिक दुर्बलता एक गंभीर नैदानिक समस्या है, जिसके समाधान के लिए नैदानिक मनोवैज्ञानिक तथा मनोचिकित्सक शुरू से ही प्रयत्नशील रहे हैं।

मानसिक दुर्बलता अथवा न्यूनता एक संरचनात्मक विकृति है, जिसमें मस्तिष्क का विकास बाधित हो जाता है और बुद्धि का विकास सीमित हो जाता है।

Grossman et al; (1973) के अनुसार "मानसिक मन्दन का तात्पर्य अधो औसत बौद्धिक क्षमता से है जो अनुकूली व्यवहार में कमी का आधार होती है और जिसकी अभिव्यक्ति विकासात्मक अवधि के दौरान होती है"।

इस परिभाषा के विश्लेषण से मानसिक दुर्बलता के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं-

(I) मानसिक दुर्बलता में बुद्धि की मात्रा औसत से कम होती है। इसी कारण मानसिक दुर्बलता को अधो-अवसत बौद्धिक क्षमता कहते हैं।

(ii) मानसिक दुर्बलता के कारण अनुकूली व्यवहारों में कठिनाई होती है, अर्थात् मानसिक दुर्बल बच्चे अपने आयु-समूह तथा अपने सांस्कृतिक समूह के अनुकूल व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के अपेक्षित मानदण्ड से बहुत पीछे होते हैं। वे सामान्यतः शिक्षण योग्य नहीं होते हैं केवल कुछ अंशों तक प्रशिक्षण योग्य होते हैं।

(iii) मानसिक दुर्बलता के लक्षण बचपन से ही दृष्टिगोचर होने लगते हैं। विकासात्मक अवधि में ही मानसिक दुर्बल को पहचाना जा सकता है।

Scanned with CamScanner

Nature, Identifications or characteristics of Mental Retardation

मानसिक दुर्बलता के कुछ निश्चित लक्षण होते हैं जिसके आधार पर मानसिक दुर्बल व्यक्ति को सामान्य व्यक्तियों से अलग करना संभव होता है, ये लक्षण निम्नलिखित हैं:—

(i) सीमित बौद्धिक योग्यता → मानसिक दुर्बलता की मौलिक विशेषता सीमित बुद्धि है। बिने साइमन परीक्षण के अनुसार एक सामान्य व्यक्ति में बौद्धिक योग्यता पायी जाती 90 से 110 बुद्धि-लब्धि तक बौद्धिक योग्यता में अधिकतम है लेकिन मानसिक दुर्बल व्यक्ति में बौद्धिक योग्यता 74 बु० ल० तक होती है।

(ii) सीमित अनुकूली व्यवहार → इसका अर्थ यह है कि मानसिक दुर्बल बच्चे अपने आयु समूह तथा अपने सांस्कृतिक समूह के अनुरूप व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के अपेक्षित मानदंड से बहुत पीछे होते हैं।

(iii) सीमित समायोजनशीलता → समायोजनशीलता सीमित होने के कारण मानसिक दुर्बल बच्चे बदलते हुए वातावरण में ~~अनुकूल~~ अपने को समायोजित करने में सफल नहीं हो पाते हैं।

(iv) सीमित प्रेरणा एवं संवेग → सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा मानसिक दुर्बल व्यक्ति में सीमित प्रेरणा तथा संवेग पाये जाते हैं।

(v) सीमित संज्ञानात्मक योग्यताएँ → मानसिक दुर्बल व्यक्ति में सीखने की योग्यता, स्मरण की योग्यता, चिंतन की योग्यता आदि काफी सीमित होती है।

(vi) शारीरिक न्यूनता → शारीरिक न्यूनता के आधार पर मानसिक दुर्बल व्यक्ति को आसानी से पहचाना जा सकता है, जैसे मंगोलिज्म, बौनापन, जलशीर्षता, लघुशीर्षता आदि

Scanned with CamScanner

(ii) सामाजिक समायोजन की कठिनाई → तर्क शक्ति व कल्पनाशक्ति के पर्याप्त अभाव तथा व्यवहार कुशलता के भी व्यापक अभाव के कारण ऐसे व्यक्ति को अपने सामाजिक समायोजन में विशेष कठिनाई का अनुभव होता है।

(i) सीमित बौद्धिक योग्यता → मानसिक दुर्बलता में व्यक्ति की बुद्धि का विकास सामान्य रूप से नहीं हो पाता है इसलिए बौद्धिक योग्यता सीमित हो जाती है। अधिक से अधिक बु०लo 74 होती है।

(iii) जीवन-स्थितियों के बोध की अयोग्यता → न्यून बौद्धिक विकास के कारण ऐसे बच्चे अपने आयु समूह तथा अपने सांस्कृतिक समूह के अनुकूल व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के अपेक्षित मानदण्ड से बहुत पीछे होते हैं।

(iv) मस्तिष्क-संरचना की असामान्यता → ऐसे व्यक्तियों के मस्तिष्क की संरचना में कुछ न कुछ असामान्यता अवश्य बनी रहती है, जिसके कारण उसका मानसिक विकास कभी भी सामान्य नहीं हो पाता है।

(v) जीवन की अल्प विस्तृति की प्रत्याशा → मानसिक मंदन से पीड़ित व्यक्ति विरले ही दीर्घ आयु वाले देखने में आते हैं। मानसिक मन्दता की स्थिति जितनी अधिक गहरी होती है, व्यक्ति की जीवन अवधि उतनी ही कम होती है।

(vi) शारीरिक अंगों की विरूपता → मानसिक मंदन वाले व्यक्तियों के शारीरिक अंगों की बनावट व गठन में भी प्रायः अनेक विचित्रताएं दृष्टिगत होती हैं, इनके कारण उनके शारीरिक रंग-रूप में व्यापक रूप से एक प्रकार की विरूपता ही बनी रहती है।

(vii) अवधान की सीमित विस्तृति → बौद्धिक विकास के मन्दन के कारण मन्दित बालकों का ध्यान विस्तार अति सीमित ही रहता है।

Scanned with CamScanner

(viii) अन्य विशेषताएं → उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त Hill (1988) ने मानसिक दुर्बल व्यक्तियों की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है-

(i) देर से प्रतिक्रिया करना
(ii) अशाब्दिक या गति शिक्षण की क्षमता अधिक होना
(iii) अधिक संकेतशील होना।
(iv) अमूर्त चिंतन का अभाव होना।
(v) आत्ममूल्यांकन की क्षमता का सीमित होना।
(vi) अभिरुचि का सीमित होना इत्यादि

Scanned with CamScanner